भूमिका

प्रारम्भ से ही मेरी रुचि भारतीय इतिहास एवं ऐतिहासिक घटनाओं पर ज्यादा रही है। ऐतिहासिक घटनाओं का सीधा प्रभाव उस समय के समाज पर पड़ना स्वाभाविक है और जैसे कि कहा जाता कि ''साहित्य समाज का दर्पण है'' इसलिए साहित्य में उस समय की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि स्थितियों का चित्रण मिलना स्वाभाविक है। प्रारम्भ से ही प्रेमचंद मेरे प्रिय लेखक रहे हैं। प्रेमचंद के बारे में जितना कहा जाय या जितना लिखा जाय उतन ही कम होगा। ज्यादा न कहते हुए मैं सिर्फ इतना ही कह सकती हूँ कि प्रेमचंद कथा साहित्य के मेरुदण्ड हैं।

एम. ए. करते समय ही मेंने तय किया था कि में प्रेमचंदजी की सम्पूर्ण कहानियों का अध्ययन करके उनकी कहानियों की मर्मज्ञता को आत्मसात करूँगी। एम. ए. प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के पश्चात् मेरी पहले पी-एच. डी करने की इच्छा थी लेकिन नौकरी की समस्या होने के कारण मेंने पहले बी.एड. करना जरूरी समझा। बी.एड. करने के बाद मैंने तुरन्त पी.-एच. डी. करने की इच्छा अपनी शोध-निर्देशिका डॉ. लता सुमन्त जी से व्यक्त की। उन्होंने मेरी इच्छा का मान रखते हुए मेरी रुचि के अनुरूप 'नवजागरण काल' का चयन करने का निर्देश दिया। इसी दौरान मेरी मुलाकात हिन्दी विभाग के प्राध्यापक एवं मेरे गुरू डॉ. मायाप्रकाश पाण्डेय जी से मुलाकात हुई जिन्होंने इस कार्य में मेरा यथायोग्य मार्गदर्शन प्रदान किया।

यह वह काल था जिसने भारतीय समाज की रूढ़िगत परंपराओं का खुले रूप से विरोध किया, जिसकी शुरुआत राजाराम मोहनराय ने ई. सन् 1829 में लार्ड विलियम बैंटिक की मदद से सती प्रथा जैसी कुरीतियों पर प्रतिबन्ध करके की। नवजागरण काल को पढ़ने पर मुझे ज्ञात हुआ कि उस समय हमारा सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक ढांचा किस तरह से चरमरा चुका था और भारतीय समाज को ऊपर उठाने के लिए कितने लोगों ने आहुतियाँ दी थी। आज जिस समाज में हम खुले रूप से साँस ले रहे हैं वह इतना आधुनिक एवं सुसमृद्ध पहले न था। विभिन्न सामाजिक संस्थाओं ने उस समय समाज को सुधारने का बीड़ा उठाया। उसी दौरान भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज में क्रान्ति एवं नवजागरण का संचार शुरू किया उनके बाद कई लेखकों व रचनाकारों ने

नवजागरण पर आधारित रचनाएं शुरू की। इनमें मुख्य रूप से पं. बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, श्यामसुन्दरदास, श्री राधा चरण गोस्वामी, श्री किशोरी लाल आदि मुख्य हैं।

प्रेमचंद ने साहित्य के क्षेत्र में लगभग इसी समय प्रवेश किया। प्रेमचंद एक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कथाकार थे। हिन्दी कथा-साहित्य में उन्होंने जो गौरव प्रदान किया है, उसका महत्व अपरिहार्य है। उनके कथा साहित्य में हमें सर्वप्रथम मानव-चरित्र की पहचान उपलब्ध होती है। प्रेमचंदजी की कहानियों में हमें उस समय की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक कुरीतियों एवं परम्पराओं से पीड़ित मनुष्य तथा उसमें भी खास कर आम! मध्यम वर्ग की दयनीय स्थिति का हृदय स्पर्शी यथार्थोन्मुख चरित्र देखने को मिलता है।

प्रेमचंदजी पर पहले भी काफी काम हो चुका है लेकिन नवजागरण से सम्बन्धित उनकी संपूर्ण कहानियों का चयन अब तक मेरी दृष्टि में नहीं आया है। इसलिए मैं पी.-एच. डी. रजिट्रेशन के लिए शोध-निर्देशिका डॉ. लता सुमन्त जी से मिली जिन्होंने मेरी रुचि एवं अध्ययन के को ध्यान में रखते हुए मुझे **"नवजागरण काल के सन्दर्भ में प्रेमचंद की कहानियॉ: एक अनुशीलन''** शोध-विषय दिया और इस पर शोध करने की सलाह दी। अपने इस शोध कार्य के लिए मैंने यथा सम्भव पूर्वाग्रह रहित तटस्थ सामाजिक दृष्टिकोण अपनाया है।

प्रस्तुत शोध कार्य के अन्तर्गत मैंने निष्पक्ष विश्लेषण करने का प्रयास किया है। इस शोध-प्रबंध में कुल छः अध्याय हैं जो इस प्रकार है---

*** अध्याय - 1 'प्रेमचंदजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व''** का है। जिसके अन्तर्गत मैंने प्रेमचंदजी का जन्म, बचपन, शिक्षा, पारिवारिक जीवन उनका संर्घष तथा उनके अन्तिम यात्रा तक के सफर को प्रस्तुत करने की कोशिश की है। इसके उपरान्त प्रेमचंद का स्वयं का शैक्षणिक लगाव एवं उनकी कृतियॉ, जिसमें उर्द उपन्यास, उर्द लघुकथाएं, उर्दू नाटक, उर्दू जीवनियॉ, उर्दू में अनूदित पुस्तकें, उर्दू लेख संग्रह तथा हिन्दी उपन्यासों की सूची, हिन्दी कहानी संग्रहों के नाम, हिन्दी लेख, हिन्दी नाटक, हिन्दी में अनूदित संग्रह, हिन्दी के पत्र संग्रह आदि की सूची दी है। अंत में प्रेमचंद के उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है।

*** अध्याय-2 "नवजागरण और हिन्दी साहित्य''** का है। जिसको मैंने कई उपविभागों में विभाजित किया है। जिसमें **प्रथम उप-अध्याय "नवजागरण का उद्‌भव और विकास''** के अन्तर्गत नवजागरण की उत्पत्ति विदेश में कैसे हुई और उसका क्या परिणाम आया यह दर्शाया गया है। साथ ही साथ भारत में नवजागरण किन कारणों से आया और इसका परिणाम आर्थिक,

सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, शैक्षणिक और साहित्यिक क्षेत्र में क्या आया इसको दर्शाने का प्रयास किया गया है।

उप-अध्याय-2" पूर्ववर्ती साहित्य और नवजागरण'' के अन्तर्गत हिन्दी साहित्य में आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा नवजागरण काल से प्रभावित आधुनिक काल की चर्चा की गई है। इसके साथ ही साथ आधुनिक काल में प्राप्त विभिन्न साहित्यिक विधाओं की भी संक्षिप्त चर्चा की गई है।

उप-अध्याय-3 "लोकजागरण एवं नवजागरण में अन्तर'' के अन्तर्गत मैनें 14 वीं सदी के समय भारत में आए लोकजागरण तथा उससे होने वाले सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक कारणों एवं उसके प्रभाव से स्थापत्य कला, विभिन्न भाषाओं का जन्म और हिन्दी साहित्य में आए परिवर्तन को दर्शाने का प्रयत्न किया है। साथ ही नवजागरण काल के आने से विभिन्न क्षेत्रों में आए परिवर्तन एवं लोकजागरण और नवजागरण के अन्तर को भी स्पष्ट किया गया है।

उप-अध्याय-4 "नवजागरण और विविध साहित्यक विधाएं'' में मैंने नवजागरण का संक्षिप्त परिचय देते हुए नवजागरण से उत्पन्न विविध आधुनिक साहित्यिक विधाओं जैसे-नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानी, निबंध, रिपोतार्ज, आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, जीवनी, आलोचना, डायरी, पत्र-पत्रिकाएं आदि गद्य विधाओं के साथ-साथ पद्य विधाओं जैसे महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक आदि की यथासंभव चर्चा करने का प्रयास किया गया है।

*** अध्याय-3 "प्रेमचंद और हिन्दी कहानी''** है। जिसे मैंने अध्याय-2 की भॉति विभिन्न उप-अध्यायों में विभाजित किया हैं इसमें कुल 4 उप-अध्याय है। जिसमें पहले **उप-अध्याय "पूर्व प्रेमचंद युग और हिन्दी कहानी''** के अन्तर्गत मैंने कहानी का अर्थ समझाते हुए उसकी परिभाषा और स्वरूप की चर्चा की है। साथ ही साथ प्रेमचंद युग एवं हिन्दी साहित्य की प्रथम ग्यारह कहानियों के शीर्षक, लेखक और प्रकाशन वर्ष भी दिए गये हैं। इसके अलावा कहानी के विभिन्न भेदों को भी दर्शाया गया है।

दूसरे उप-अध्याय-"स्वधीनता आंदोलन और प्रेमचंद'' के अन्तर्गत मैंने अंग्रेजों के भारत आगमन के पूर्व और उसके बाद की सामाजिक स्थिति को दर्शाने का प्रयत्न किया है। इसके अलावा गॉधीजी और भारत के अन्य राष्ट्रीय नेताओं ने किस तरह से भारत को आजादी

दिलवाने के लिए स्वाधीनता आन्दोलन का प्रारम्भ किया है और इसका प्रेमचंद जी तथा उनके साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा उसका जिक्र किया गया है।

तीसरे उप-अध्याय-"आधुनिकता एवं हिन्दी कहानी और प्रेमचंद'' के अन्तर्गत मैंने यह दर्शाने का प्रयत्न किया है कि नवजागरण की वजह से समाज में जिस आधुनिकता का जन्म हुआ उसका साहित्य पर क्या प्रभाव पड़ा और इस आधुनिकता के दौर में हिन्दी कहानी का साहित्य किस चरम सीमा तक विकास पा सका है इसकी चर्चा करने की कोशिश की है।

*** अध्याय-4 "नवजागरण और प्रेमचंद''** का है। जिसे मैंने विभिन्न उप-अध्यायों में विभक्त किया है। जिसमें **प्रथम उप-अध्याय "नवजागरण और प्रेमचंद की कहानियॉं''** में नवजागरण का सामान्य परिचय देते हुए उसका प्रभाव विभिन्न क्षेत्रों जैसे आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एव शैक्षणिक आदि में किस प्रकार देखने को मिलता है उसकी संक्षिप्त चर्चा करने का प्रयत्न किया है। इसके साथ प्रेमचंद की कहानियों में उस समय की कुरीतियों और परम्पराओं के साथ मुख्य समस्याएं यथा- दलित वर्ग, मध्यम वर्ग और नारियों पर हो रहे अत्याचार का संक्षिप्त वर्णन किया गया है।

द्वितीय उप-अध्याय "नवजागरण से संबंधित प्रेमचंद की कहानियॉं'' में मैने प्रेमचंद की 302 कहानियों में से मात्र 38 ऐसी कहानियॉं अलग की जिसमें पूर्ण रूप से नवजागरण देखने को मिलता है। इन 38 कहानियों को मैंने 15 विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत रखा है। यथा--

1. छुआछूत का विरोध करती कहानियॉं
2. विधवा विवाह का समर्थन करती कहानियॉं
3. अनमेल विवाह का विरोध करती कहानी
4. दहेज प्रथा का विरोध करती कहानियॉं
5. अपशकुन का विरोध करती कहानियॉं
6. प्रर्दा प्रथा का विरोध करती कहानी
7. संयुक्त परिवार की पक्षधर कहानी
8. परिवार नियोजन पर आधारित कहानियॉं
9. महाजनी सभ्यता का विरोध करती कहानियॉं
10. पूंजीपति प्रथा का विरोध करती कहानियॉं
11. स्वाभिमान परक कहनियॉं

12.राष्ट्रीय एकता पर आधारित कहानी

13.धर्म एवं सम्प्रदायिकता का विरोध्ध करती कहानियॉ

14.नशाबन्दी से सम्बन्धित कहानियॉ

15.स्वदेशी वस्त्रों की पक्षधर कहानियॉ

तृतीय उप-अध्याय 'प्रेमचंद की कहानियों की भाषा शैली'' के अन्तर्गत मैंने प्रेमचंद की कहानियों में भाषा-शैली का प्रयोग किस रूप में हुआ है इसका संक्षिप्त परिचय दिया है।

*** अध्याय-5** में मैंने प्रेमचंद की बाकी बची हुई 263 कहानियों को 14 विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत विभाजित किया है। जो इस प्रकार है।

1. सामाजिक एवे पारिवारिक कहानियॉ
2. नारी विमर्श पर आधारित कहानियॅ
3. दलित विमर्श और छुआछूत पर आधारित कहानियॉ
4. ऐतिहासिक कहानियॉ
5. राजनैतिक कहानियॉ
6. साम्प्रदायिक कहानियॉ
7. राष्ट्रप्रेम पर आधारित कहानियॉ
8. शैक्षणिक कहानियॉ
9. बाल-मनोवैज्ञानिक कहानियॉ
10. पशुओं पर आधारित कहानियॉ
11. अंध श्रद्धा पर आधारित कहानियॉ
12. आत्मकथात्मक कहानियॉ
13. आधुनिक साधनों से हो रहे नुकसान पर आधारित कहानियॉ
14. अन्य समस्याओं पर आधारित कहानियॉ

*** अध्याय - 6. उपसंहार** का है। जिसमें मैंने शोध अध्ययन द्वारा प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया है।

परिशिष्ट के अन्तर्गत पुस्तकों की सूची के साथ आधारभूत ग्रन्थों, सहायक ग्रन्थों और पत्र-पत्रिकाओं की सूची दी गई है।

सन्दर्भ सूची

1- प्रेमचंद जीवन और कृतित्व - हंसराज 'रहबर'

2- प्रेमचंद: उनकी कहानी कला - सत्येन्द्र

3- प्रेमचंद - डॉ. जगतनारायण हैकरवाला

4- प्रेमचंद एक अध्ययन - राजशेखर गुरू

5- प्रेमचंद घर में - श्रीमती शिवरानी देवी

6- प्रेमचंद विश्वकोष - कमल किशोर गोयनका, भाग - 1

7- नवजागरण और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - बलीसिंह

8- पाश्चात्य समीक्षा दर्शन - जगदीश चन्द्र जैन

9- नवजागरण के पुरोधा: दयानन्द सरस्वती - डॉ. भवानीलाल भारतीय

10- भारतीय नवजागरण और भारतेन्दु तथा नर्मदयुग का साहित्य- महावीरसिंह चौहान

11- भारतीय साहित्य का प्रवाह - पी. सरन

12- प्रेमचंद युगीन भारतीय साहित्य - डॉ. इन्द्र मोहन कुमार सिन्हा

13- हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास, भाग-8, संपादक - डॉ. विनय मोहन शर्मा

14- हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास, भाग-9, संपादक - सुधाकर पाण्डेय

15- महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण - रामविलास शर्मा

16- भारत का इतिहास, खण्ड-ख, संपादक - टाटा मेकसाही

17- आधुनिक भारत का इतिहास - संपादक - आर. एन. शुक्ल

18- आधुनिक भारत का इतिहास और स्वातंत्रयसंग्राम - डॉ. रमणलाल क. धारैया

19- भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति का विकास - बी.बी. भूमिया

20- भारतीय राजनीतिक चिंतक - डॉ. पुखराज जैन

21- आधुनिक भारत का इतिहास: एक नवीन मूल्यांकन - बी. एल. ग्रोवर

22- लोकजागरण और हिन्दी साहित्य-आचार्य रामचन्द शुक्ल, संपादक - डॉ रामविलास शर्मा
23- नवजागरण और छायावाद - महेन्द्रनाथ राय
24- हिन्दी साहित्य का इतिहास संपादक - डॉ. नगेन्द्र
25- हिन्दी साहित्य का इतिहास - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
26- भारतीय स्वातंत्रय आन्दोलन और हिन्दी साहित्य - डॉ. कीर्तिलता
27- स्वाधीनता आन्दोलन और प्रेमचंद - डॉ. हैकरवाला
28- 1857 के स्वाधीनता संग्राम का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव - डॉ. भगवानदास माहौर
29- हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास - डॉ. लक्ष्मीनारायण वैरागी
30- हिन्दी कहानियों की शिल्प-विधि का विकास - डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल
31- हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक अध्ययन - डॉ. ब्रह्मदत्त शर्मा
32- स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कहानी में लक्षित अलगाव की धारणा - डॉ. बिन्दू दूबे
33- क्हानीकला और कलाकार - श्री व्यथित हृदय
34- प्रेमचंद की सम्पूर्ण कहानियॉ - भाग- 1 से 5 तक, कान्तीप्रसाद शर्मा
35- मानसरोवर भाग - 1 से 8 तक